तीसरी दुनिया के चौथे स्तंभ थे महेन्द्रभाई

दुनिया के बहुसंख्यक वंचितों, दलितों, आदिवासियों, महिलाओं आदि के हक में आवाज उठाने को आजकल 'विकल्प" कहा जाता है और इन तबकों के तीखे संघर्ष और निर्माण की कहानियां 'वैकल्पिक मीडिया' मानी जाती हैं। विनोबा के आग्रह पर शुरू हुई 'सर्वोदय प्रेस सर्विस' इसी वैकल्पिक मीडिया की मुख्य वाहक रही है। जल, जंगल, ज़मीन, विस्थापन, रोज़गार, बड़े बांध, पर्यावरण, गैर-बराबरी, औरतों की दोयम दर्जे की हैसियत आदि मुद्दों पर हर हफ्ते देश भर के लगभग दो-ढाई सौ अखबारों, पत्रिकाओं तथा संस्थाओं को उपयोगी सामग्री पहुंचाने का दुरुह काम एक मामूली-सी टेबल से कर पाना 'सप्रेस' के सम्पादक श्री महेन्द्रकुमार का ही कमाल रहा है। पिछले लगभग साढ़े चार दशकों में मीडिया में तरह-तरह के बदलाव आए, लेकिन सप्रेस गांधी विचार को आधार बनाकर लगातार अपने काम में लगी रही।

सन 1960 में 'सर्वोदय नगर' का मिशन लेकर इन्दौर आए विनोबा भावे की चिन्ता थी कि सर्वोदय का मंच तो बना है लेकिन कोई प्रेस नहीं है। उस दौर में जयप्रकाश नारायण की अपील पर अपनी एम.ए. की पढ़ाई बीच में छोड़कर भूदान के काम में लगे निमाड़ के गांव लोनारा के एक आदर्शवादी युवक महेन्द्रकुमार ने गांधी विचार की प्रेस खड़ी करने की ज़िम्मेदारी उठाई और विनोबा से मात्र एक रुपए की सहयोग राशि लेकर सप्रेस की शुरुआत हुई। बिना मांगे मिले इस एक रुपए की परम्परा महेन्द्रभाई ने जीवन भर निभाई। सप्रेस में घोर आर्थिक तंगी के कई मौके आए लेकिन इसके सम्पादक ने न तो कभी कोई आवेदन किया और न ही सहायता की अपील। गांधी शांति प्रतिष्ठान ने जीवन निर्वाह के लिए उन्हें आजीवन कार्यकर्ता बनाया और देश भर में फैले असंख्य मित्रों, सहयोगियों ने स्वप्रेरणा से यदा-कदा सप्रेस को सहायता दी।

मूल्यों का कड़ाई से पालन करने वालों में आ जाने वाली कड़वाहट से कोसों दूर महेन्द्रभाई में अद्‌भुत प्रत्युत्पन्नमति यानी विट थी। महेन्द्र भाई ने सिद्धांतों को लेकर कभी कोई समझौता नहीं किया। अपने इसी आग्रह के चलते आपात काल में उन्होंने कुछ महीनों की जेल यात्रा भी की। वे जीवनभर खुद के बनाए सूत के कपड़े वापरते रहे लेकिन ऐसा दूसरे भी करें इसका उन्होंने दुराग्रह नहीं पाला। इसीलिए वे सदा, सभी के मित्र बने रहे और यह मित्रता इस हद तक रही कि जब वे जेल गए तो इन्दौर में नईदुनिया के तत्कालीन सम्पादक श्री राजेन्द्र माथुर ने सप्रेस बुलेटिन के महत्व को समझकर उसे निकालने की ज़िम्मेदारी निभाई। इन्दौर और देश भर में फैले ठेठ वामपंथियों से लेकर दक्षिणपंथियों तक में उनके मित्रों का होना इसी की एक बानगी है। अनेक उदाहरण हैं जब गांधी विचार के आलोचकों तक से आपने सप्रेस के लिए लिखवाया। आदिवासी मुक्ति संगठन की केन्द्रीय समिति हो या फिर तरुण शांति सेना के शिविर, युवाओं के बीच इसीलिए वे साग्रह बुलाए और सादर सुने, माने जाते रहे। एक बुजुर्ग की युवाओं के साथ घनिष्ठ मित्रता और सार्थक संवाद महेन्द्रभाई की पहचान बन गए थे।

महेन्द्रभाई से फुर्सत में सुने गए विनोबा के साथ के अनेक संस्मरणों में एक मशहूर था जब विनोबा ने इन्दौर में साहित्य बिक्री के लिए पहले से आए कार्यकर्ता से उसका हिसाब-किताब मांगा था और उसके पैसे-धेले के जमा खर्च को अलग रखकर पूछा था कि इन्दौर में तुमने कितने घर बनाए? सामाजिक कार्यकर्ताओं से महेन्द्रभाई का भी यह सवाल रहा कि तुमने अपने कार्यक्षेत्र में कितने ऐसे घर बनाए हैं जहां कभी भी, कैसे भी जाने पर तुम्हारा स्वागत ही हो। खुद महेन्द्रभाई इसमें माहिर थे और इसीलिए देशभर में उनके